

प्रधानमंत्री कार्यालय

मन की बात 2.0' की 15वीं कड़ी में प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ (30.08.2020)

प्रविष्टि तिथि: 30 AUG 2020 11:33AM by PIB Delhi

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार | आमतौर पर ये समय उत्सव का होता है, जगह-जगह मेले लगते हैं, धार्मिक पूजा-पाठ होते हैं | कोरोना के इस संकट काल में लोगों में उमंग तो है, उत्साह भी है, लेकिन, हम सबको मन को छू जाए, वैसा अनुशासन भी है | बहुत एक रूप में देखा जाए तो नागरिकों में दायित्व का एहसास भी है | लोग अपना ध्यान रखते हुए, दूसरों का ध्यान रखते हुए, अपने रोजमर्रा के काम भी कर रहे हैं | देश में हो रहे हर आयोजन में जिस तरह का संयम और सादगी इस बार देखी जा रही है, वो अभूतपूर्व है | गणेशोत्सव भी कहीं ऑनलाइन मनाया जा रहा है, तो, ज्यादातर जगहों पर इस बार इकोफ्रेंडली गणेश जी की प्रतिमा स्थापित की गई है | साथियो, हम, बहुत बारीकी से अगर देखेंगे, तो एक बात अवश्य हमारे ध्यान में आयेगी - हमारे पर्व और पर्यावरण | इन दोनों के बीच एक बहुत गहरा नाता रहा है | जहां एक ओर हमारे पर्वों में पर्यावरण और प्रकृति के साथ सहजीवन का सन्देश छिपा होता है तो दूसरी ओर कई सारे पर्व प्रकृति की रक्षा के लिये ही मनाए जाते हैं | जैसे, बिहार के पश्चिमी चंपारण में, सदियों से थारु आदिवासी समाज के लोग 60 घंटे के lockdown या उनके ही शब्दों में कहें तो '60 घंटे के बरना' का पालन करते हैं | प्रकृति की रक्षा के लिये बरना को थारु समाज ने अपनी परंपरा का हिस्सा बना लिया है और सदियों से बनाया है | इस दौरान न कोई गाँव में आता है, न ही कोई अपने घरों से बाहर निकलता है और लोग मानते हैं कि अगर वो बाहर निकले या कोई बाहर से आया, तो उनके आने-जाने से, लोगों की रोजमर्रा की गतिविधियों से, नए पेड़-पौधों को नुकसान हो सकता है | बरना की शुरुआत में भव्य तरीके से हमारे आदिवासी भाई-बहन पूजा-पाठ करते हैं और उसकी समाप्ति पर आदिवासी परम्परा के गीत,संगीत, नृत्य जमकर के उसके कार्यक्रम भी होते हैं |

साथियो, इन दिनों ओणम का पर्व भी धूम-धाम से मनाया जा रहा है | ये पर्व चिनगम महीने में आता है | इस दौरान लोग कुछ नया खरीदते हैं, अपने घरों को सजाते हैं, पूक्कलम बनाते हैं, ओनम-सादिया का आनंद लेते हैं, तरह-तरह के खेल और प्रतियोगिताएं भी होती हैं | ओणम की धूम तो, आज, दूर-सुदूर विदेशों तक पहुँची हुई है | अमेरिका हो, यूरोप हो, या खाड़ी देश हों, ओणम का उल्लास आपको हर कहीं मिल जाएगा | ओणम एक International Festival बनता जा रहा है |

साथियो, ओणम हमारी कृषि से जुड़ा हुआ पर्व है | ये हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए भी एक नई शुरुआत का समय होता है | किसानों की शक्ति से ही तो हमारा जीवन, हमारा समाज चलता है | हमारे पर्व किसानों के परिश्रम से ही रंग-बिरंगे बनते हैं | हमारे अन्नदाता को, किसानों की जीवनदायिनी शक्ति को तो वेदों में भी बहुत गौरवपूर्ण रूप से नमन किया गया है |

ऋग्वेद में मन्त्र है –

अन्नानां पतये नमः, क्षेत्राणाम पतये नमः |

अर्थात्, अन्नदाता को नमन है, किसान को नमन है। हमारे किसानों ने कोरोना की इस कठिन परिस्थितियों में भी अपनी ताकत को साबित किया है। हमारे देश में इस बार खरीफ की फसल की बुआई पिछले साल के मुकाबले 7 प्रतिशत ज्यादा हुई है।

धान की रुपाई इस बार लगभग 10 प्रतिशत, दालें लगभग 5 प्रतिशत, मोटे अनाज-Coarse Cereals लगभग 3 प्रतिशत, Oilseeds लगभग 13 प्रतिशत, कपास लगभग 3 प्रतिशत ज्यादा बोई गई है। मैं, इसके लिए देश के किसानों को बधाई देता हूँ, उनके परिश्रम को नमन करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, कोरोना के इस कालखंड में देश कई मोर्चों पर एक साथ लड़ रहा है, लेकिन इसके साथ-साथ, कई बार मन में ये भी सवाल आता रहा कि इतने लम्बे समय तक घरों में रहने के कारण, मेरे छोटे-छोटे बाल-मित्रों का समय कैसे बीतता होगा। और इसी से मैंने गांधीनगर की Children University जो दुनिया में एक अलग तरह का प्रयोग है, भारत सरकार के महिला और बाल विकास मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय, सूक्ष्म-लघु और मध्यम उद्योग मंत्रालय, इन सभी के साथ मिलकर, हम बच्चों के लिये क्या कर सकते हैं, इस पर मंथन किया, चिंतन किया। मेरे लिए ये बहुत सुखद था, लाभकारी भी था क्योंकि एक प्रकार से ये मेरे लिए भी कुछ नया जानने का, नया सीखने का अवसर बन गया।

साथियों, हमारे चिंतन का विषय था- खिलौने और विशेषकर भारतीय खिलौने। हमने इस बात पर मंथन किया कि भारत के बच्चों को नए-नए Toys कैसे मिलें, भारत, Toy Production का बहुत बड़ा hub कैसे बने। वैसे मैं 'मन की बात' सुन रहे बच्चों के माता-पिता से क्षमा माँगता हूँ, क्योंकि हो सकता है, उन्हें, अब, ये 'मन की बात' सुनने के बाद खिलौनों की नयी-नयी demand सुनने का शायद एक नया काम सामने आ जाएगा।

साथियों, खिलौने जहाँ activity को बढ़ाने वाले होते हैं, तो खिलौने हमारी आकांक्षाओं को भी उड़ान देते हैं। खिलौने केवल मन ही नहीं बहलाते, खिलौने मन बनाते भी हैं और मकसद गढ़ते भी हैं। मैंने कहीं पढ़ा, कि, खिलौनों के सम्बन्ध में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि best Toy वो होता है जो Incomplete हो। ऐसा खिलौना, जो अधूरा हो, और, बच्चे मिलकर खेल-खेल में उसे पूरा करें। गुरुदेव टैगोर ने कहा था कि जब वो छोटे थे तो खुद की कल्पना से, घर में मिलने वाले सामानों से ही, अपने दोस्तों के साथ, अपने खिलौने और खेल बनाया करते थे। लेकिन, एक दिन बचपन के उन मौज-मस्ती भरे पलों में बड़ों का दखल हो गया। हुआ ये था कि उनका एक साथी, एक बड़ा और सुंदर सा, विदेशी खिलौना लेकर आ गया। खिलौने को लेकर इतराते हुए अब सब साथी का ध्यान खेल से ज्यादा खिलौने पर रह गया। हर किसी के आकर्षण का केंद्र खेल नहीं रहा, खिलौना बन गया। जो बच्चा कल तक सबके साथ खेलता था, सबके साथ रहता था, घुलमिल जाता था, खेल में डूब जाता था, वो अब दूर रहने लगा। एक तरह से बाकी बच्चों से भेद का भाव उसके मन में बैठ गया। महंगे खिलौने में बनाने के लिये भी कुछ नहीं था, सीखने के लिये भी कुछ नहीं था। यानी कि, एक आकर्षक खिलौने ने एक उत्कृष्ट बच्चे को कहीं दबा दिया, छिपा दिया, मुरझा दिया। इस खिलौने ने धन का, सम्पत्ति का, जरा बड़प्पन का प्रदर्शन कर लिया लेकिन उस बच्चे की Creative Spirit को बढ़ने और संवरने से रोक दिया। खिलौना तो आ गया, पर खेल खत्म हो गया और बच्चे का खिलना भी खो गया। इसलिए, गुरुदेव कहते थे, कि, खिलौने ऐसे होने चाहिए जो बच्चे के बचपन को बाहर लाये, उसकी creativity को सामने लाए। बच्चों

के जीवन के अलग-अलग पहलू पर खेलौनों का जो प्रभाव है, इस पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी बहुत ध्यान दिया गया है। खेल-खेल में सीखना, खेलौने बनाना सीखना, खेलौने जहां बनते हैं वहाँ की visit करना, इन सबको curriculum का हिस्सा बनाया गया है।

साथियो, हमारे देश में Local खेलौनों की बहुत समृद्ध परंपरा रही है। कई प्रतिभाशाली और कुशल कारीगर हैं, जो अच्छे खेलौने बनाने में महारत रखते हैं। भारत के कुछ क्षेत्र Toy Clusters यानी खेलौनों के केन्द्र के रूप में भी विकसित हो रहे हैं। जैसे, कर्नाटक के रामनगरम में चन्नापटना, आन्ध्र प्रदेश के कृष्णा में कोंडापल्ली, तमिलनाडु में तंजौर, असम में धुबरी, उत्तर प्रदेश का वाराणसी - कई ऐसे स्थान हैं, कई नाम गिना सकते हैं। आपको ये जानकारी आश्चर्य होगा कि Global Toy Industry, 7 लाख करोड़ रुपये से भी अधिक की है। 7 लाख करोड़ रुपयों का इतना बड़ा कारोबार, लेकिन, भारत का हिस्सा उसमें बहुत कम है। अब आप सोचिए कि जिस राष्ट्र के पास इतनी विरासत हो, परम्परा हो, विविधता हो, युवा आबादी हो, क्या खेलौनों के बाजार में उसकी हिस्सेदारी इतनी कम होनी, हमें, अच्छा लगेगा क्या? जी नहीं, ये सुनने के बाद आपको भी अच्छा नहीं लगेगा। देखिये साथियो, Toy Industry बहुत व्यापक है। गृह उद्योग हो, छोटे और लघु उद्योग हो, MSMEs हों, इसके साथ-साथ बड़े उद्योग और निजी उद्यमी भी इसके दायरे में आते हैं। इसे आगे बढ़ाने के लिए देश को मिलकर मेहनत करनी होगी। अब जैसे आन्ध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम में श्रीमान सी.वी. राजू हैं। उनके गांव के एति-कोप्पका Toys एक समय में बहुत प्रचलित थे। इनकी खासियत ये थी कि ये खेलौने लकड़ी से बनते थे, और दूसरी बात ये कि इन खेलौनों में आपको कहीं कोई angle या कोण नहीं मिलता था। ये खेलौने हर तरफ से round होते थे, इसलिए, बच्चों को चोट की भी गुंजाइश नहीं होती थी। सी.वी. राजू ने एति-कोप्पका toys के लिये, अब, अपने गाँव के कारीगरों के साथ मिलकर एक तरह से नया movement शुरू कर दिया है। बेहतरीन quality के एति-कोप्पका Toys बनाकर सी.वी. राजू ने स्थानीय खेलौनों की खोई हुई गरिमा को वापस ला दिया है। खेलौनों के साथ हम दो चीजें कर सकते हैं – अपने गौरवशाली अतीत को अपने जीवन में फिर से उतार सकते हैं और अपने स्वर्णिम भविष्य को भी सँवार सकते हैं। मैं अपने start-up मित्रों को, हमारे नए उद्यमियों से कहता हूँ - Team up for toys... आइए मिलकर खेलौने बनाएं। अब सभी के लिये Local खेलौनों के लिये Vocal होने का समय है। आइए, हम अपने युवाओं के लिये कुछ नए प्रकार के, अच्छी quality वाले, खेलौने बनाते हैं। खेलौना वो हो जिसकी मौजूदगी में बचपन खिले भी, खिलखिलाए भी। हम ऐसे खेलौने बनाएं, जो पर्यावरण के भी अनुकूल हों।

साथियो, इसी तरह, अब कंप्यूटर और स्मार्टफ़ोन के इस जमाने में कंप्यूटर गेम्स का भी बहुत trend है। ये गेम्स बच्चे भी खेलते हैं, बड़े भी खेलते हैं। लेकिन, इनमें भी जितने गेम्स होते हैं, उनकी themes भी अधिकतर बाहर की ही होती हैं। हमारे देश में इतने ideas हैं, इतने concepts हैं, बहुत समृद्ध हमारा इतिहास रहा है। क्या हम उन पर games बना सकते हैं? मैं देश के युवा talent से कहता हूँ, आप, भारत में भी games बनाइये, और, भारत के भी games बनाइये। कहा भी जाता है - Let the games begin ! तो चलो, खेल शुरू करते हैं !

साथियो, आत्मनिर्भर भारत अभियान में Virtual Games हों, Toys का Sector हो, सबने, बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है और ये अवसर भी है। जब आज से सौ वर्ष पहले, असहयोग आंदोलन शुरू हुआ, तो गांधी जी ने लिखा था कि – “असहयोग आन्दोलन, देशवासियों में आत्मसम्मान और अपनी शक्ति का बोध कराने का एक प्रयास है।”

आज, जब हम देश को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास कर रहे हैं, तो, हमें, पूरे आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना है, हर क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाना है। असहयोग आंदोलन के रूप में जो बीज बोया गया था, उसे, अब, आत्मनिर्भर भारत के वट वृक्ष में परिवर्तित करना हम सब का दायित्व है।

मेरे प्यारे देशवासियों, भारतीयों के innovation और solution देने की क्षमता का लोहा हर कोई मानता है और जब समर्पण भाव हो, संवेदना हो तो ये शक्ति असीम बन जाती है। इस महीने की शुरुआत में, देश के युवाओं के सामने, एक app innovation challenge रखा गया। इस आत्मनिर्भर भारत app innovation challenge में हमारे युवाओं ने बढ़-चढ़कर के हिस्सा लिया। करीब, 7 हजार entries आईं, उसमें भी, करीब-करीब दो तिहाई apps tier two और tier three शहरों के युवाओं ने बनाए हैं। ये आत्मनिर्भर भारत के लिए, देश के भविष्य के लिए, बहुत ही शुभ संकेत है। आत्मनिर्भर app innovation challenge के results देखकर आप ज़रूर प्रभावित होंगे। काफी जाँच-परख के बाद, अलग-अलग category में, लगभग दो दर्जन Apps को award भी दिए गये हैं। आप जरूर इन Apps के बारे में जाने और उनसे जुड़ें। हो सकता है आप भी ऐसा कुछ बनाने के लिए प्रेरित हो जायें। इनमें एक App है, कुटुकी kids learning app. ये छोटे बच्चों के लिए ऐसा interactive app है जिसमें गानों और कहानियों के जरिए बात-बात में ही बच्चे math science में बहुत कुछ सीख सकते हैं। इसमें activities भी हैं, खेल भी हैं। इसी तरह एक micro blogging platform का भी app है। इसका नाम है कू - K OO कू। इसमें, हम, अपनी मातृभाषा में text, video और audio के जरिए अपनी बात रख सकते हैं, interact कर सकते हैं। इसी तरह चिंगारी App भी युवाओं के बीच काफी popular हो रहा है। एक app है Ask सरकार। इसमें chat boat के जरिए आप interact कर सकते हैं और किसी भी सरकारी योजना के बारे में सही जानकारी हासिल कर सकते हैं, वो भी text, audio और video तीनों तरीकों से। ये आपकी बड़ी मदद कर सकता है। एक और app है, step set go. ये fitness App है। आप कितना चले, कितनी calories burn की, ये सारा हिसाब ये app रखता है, और आपको fit रहने के लिये motivate भी करता है। मैंने ये कुछ ही उदाहरण दिये हैं। कई और apps ने भी इस challenge को जीता है। कई Business Apps हैं, games के App है, जैसे 'Is EqualTo', Books & Expense, Zoho (जोहो) Workplace, FTC Talent. आप इनके बारे में net पर search करिए, आपको बहुत जानकारी मिलेगी। आप भी आगे आएं, कुछ innovate करें, कुछ implement करें। आपके प्रयास, आज के छोटे-छोटे start-ups, कल बड़ी-बड़ी कंपनियों में बदलेंगे और दुनिया में भारत की पहचान बनेंगे। और आप ये मत भूलिये कि आज जो दुनिया में बहुत बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ नज़र आती हैं ना, ये भी, कभी, startup हुआ करती थी।

प्रिय देशवासियों, हमारे यहाँ के बच्चे, हमारे विद्यार्थी, अपनी पूरी क्षमता दिखा पाएं, अपना सामर्थ्य दिखा पाएं, इसमें बहुत बड़ी भूमिका Nutrition की भी होती है, पोषण की भी होती है। पूरे देश में सितम्बर महीने को पोषण माह - Nutrition Month के रूप में मनाया जाएगा। Nation और Nutrition का बहुत गहरा सम्बन्ध होता है। हमारे यहाँ एक कहावत है – “यथा अन्नम तथा मन्त्रम्”

यानी, जैसा अन्न होता है, वैसा ही हमारा मानसिक और बौद्धिक विकास भी होता है। Experts कहते हैं कि शिशु को गर्भ में, और बचपन में, जितना अच्छा पोषण मिलता है, उतना अच्छा उसका मानसिक विकास होता है और वो स्वस्थ रहता है। बच्चों के पोषण के लिये भी उतना ही जरूरी है कि माँ को भी

पूरा पोषण मिले और पोषण या Nutrition का मतलब केवल इतना ही नहीं होता कि आप क्या खा रहे हैं, कितना खा रहे हैं, कितनी बार खा रहे हैं। इसका मतलब है आपके शरीर को कितने जरूरी पोषक तत्व, nutrients मिल रहे हैं। आपको Iron, Calcium मिल रहे हैं या नहीं, Sodium मिल रहा है या नहीं, vitamins मिल रहे हैं या नहीं, ये सब Nutrition के बहुत Important aspects हैं। Nutrition के इस आन्दोलन में People Participation भी बहुत जरूरी है। जन-भागीदारी ही इसको सफल करती है। पिछले कुछ वर्षों में, इस दिशा में, देश में, काफी प्रयास किए गये हैं। खासकर हमारे गाँवों में इसे जनभागीदारी से जन-आन्दोलन बनाया जा रहा है। पोषण सप्ताह हो, पोषण माह हो, इनके माध्यम से ज्यादा से ज्यादा जागरूकता पैदा की जा रही है। स्कूलों को जोड़ा गया है। बच्चों के लिये प्रतियोगिताएं हों, उनमें Awareness बढ़े, इसके लिये भी लगातार प्रयास जारी हैं। जैसे Class में एक Class Monitor होता है, उसी तरह Nutrition Monitor भी हो, report card की तरह Nutrition Card भी बने, इस तरह की भी शुरुआत की जा रही है। पोषण माह – Nutrition Month के दौरान MyGov portal पर एक food and nutrition quiz भी आयोजित की जाएगी, और साथ ही एक मीम competition भी होगा। आप खुद participate करें और दूसरों को भी motivate करें।

साथियो अगर आपको गुजरात में सरदार वल्लभभाई पटेल के Statue of Unity जाने का अवसर मिला होगा, और कोविड के बाद जब वो खुलेगा और आपको जाने का अवसर मिलेगा, तो, वहां एक unique प्रकार का Nutrition Park बनाया गया है। खेल-खेल में ही Nutrition की शिक्षा आनंद-प्रमोद के साथ वहां जरूर देख सकते हैं।

साथियो, भारत एक विशाल देश है, खान-पान में ढेर सारी विविधता है। हमारे देश में छह अलग-अलग ऋतुयें होती हैं, अलग-अलग क्षेत्रों में वहाँ के मौसम के हिसाब से अलग-अलग चीजें पैदा होती हैं। इसलिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि हर क्षेत्र के मौसम, वहाँ के स्थानीय भोजन और वहाँ पैदा होने वाले अन्न, फल, सब्जियों के अनुसार एक पोषक, nutrient rich, diet plan बने। अब जैसे Millets – मोटे अनाज – रागी है, ज्वार है, ये बहुत उपयोगी पोषक आहार हैं। एक “भारतीय कृषि कोष” तैयार किया जा रहा है, इसमें हर एक जिले में क्या-क्या फसल होती है, उनकी nutrition value कितनी है, इसकी पूरी जानकारी होगी। ये आप सबके लिए बहुत बड़े काम का कोष हो सकता है। आइये, पोषण माह में पौष्टिक खाने और स्वस्थ रहने के लिए हम सभी को प्रेरित करें।

प्रिय देशवासियो, बीते दिनों, जब हम अपना स्वतंत्रता दिवस मना रहे थे, तब एक दिलचस्प खबर पर मेरा ध्यान गया। ये खबर है हमारे सुरक्षाबलों के दो जांबाज किरदारों की। एक है सोफी और दूसरी विदा। सोफी और विदा, Indian Army के श्वान हैं, Dogs हैं और उन्हें Chief of Army Staff ‘Commendation Cards’ से सम्मानित किया गया है। सोफी और विदा को ये सम्मान इसलिए मिला, क्योंकि इन्होंने, अपने देश की रक्षा करते हुए, अपना कर्तव्य बखूबी निभाया है। हमारी सेनाओं में, हमारे सुरक्षाबलों के पास, ऐसे, कितने ही बहादुर श्वान हैं Dogs हैं जो देश के लिये जीते हैं और देश के लिये अपना बलिदान भी देते हैं। कितने ही बम धमाकों को, कितनी ही आतंकी साजिशों को रोकने में ऐसे Dogs ने बहुत अहम् भूमिका निभाई है। कुछ समय पहले मुझे देश की सुरक्षा में dogs की भूमिका के बारे में बहुत विस्तार से जानने को मिला। कई किस्से भी सुने। एक dog बलराम ने 2006 में अमरनाथ यात्रा के रास्ते में, बड़ी मात्रा में, गोला-बारूद खोज निकाला था। 2002 में dog भावना ने IED खोजा था। IED निकालने के दौरान आतंकियों ने विस्फोट कर दिया, और श्वान शहीद हो गये। दो-तीन वर्ष पहले, छत्तीसगढ़ के बीजापुर में CRPF का sniffer dog ‘Cracker’ भी IED blast में शहीद हो गया था। कुछ

दिन पहले ही आपने शायद TV पर एक बड़ा भावुक करने वाला दृश्य देखा होगा, जिसमें, बीड पुलिस अपने साथी Dog रॉकी को पूरे सम्मान के साथ आखिरी विदाई दे रही थी। रॉकी ने 300 से ज्यादा केसों को सुलझाने में पुलिस की मदद की थी। Dogs की Disaster Management और Rescue Missions में भी बहुत बड़ी भूमिका होती है। भारत में तो National Disaster Response Force – NDRF ने ऐसे दर्जनों Dogs को Specially Train किया है। कहीं भूकंप आने पर, ईमारत गिरने पर, मलबे में दबे जीवित लोगों को खोज निकालने में ये dogs बहुत expert होते हैं।

साथियो, मुझे यह भी बताया गया कि Indian Breed के Dogs भी बहुत अच्छे होते हैं, बहुत सक्षम होते हैं। Indian Breeds में मुधोल हाउंड हैं, हिमाचली हाउंड है, ये बहुत ही अच्छी नस्लें हैं। राजापलायम, कत्री, चिप्पीपराई, और कोम्बाई भी बहुत शानदार Indian breeds हैं। इनको पालने में खर्च भी काफी कम आता है, और ये भारतीय माहौल में ढले भी होते हैं। अब हमारी सुरक्षा एजेंसियों ने भी इन Indian breed के dogs को अपने सुरक्षा दस्ते में शामिल कर रही हैं। पिछले कुछ समय में आर्मी, CISF, NSG ने मुधोल हाउंड dogs को trained करके dog squad में शामिल किया है, CRPF ने कोम्बाई dogs को शामिल किया है। Indian Council of Agriculture Research भी भारतीय नस्ल के Dogs पर research कर रही है। मकसद यही है कि Indian breeds को और बेहतर बनाया जा सके, और, उपयोगी बनाया जा सके। आप internet पर इनके नाम search करिए, इनके बारे में जानिए, आप इनकी खूबसूरती, इनकी qualities देखकर हैरान हो जाएंगे। अगली बार, जब भी आप, dog पालने की सोचें, आप जरूर इनमें से ही किसी Indian breed के dog को घर लाएँ। आत्मनिर्भर भारत, जब जन-मन का मन्त्र बन ही रहा है, तो कोई भी क्षेत्र इससे पीछे कैसे छूट सकता है।

मेरे प्रिय देशवासियो, कुछ दिनों बाद, पांच सितम्बर को हम शिक्षक दिवस मनायेंगे। हम सब जब अपने जीवन की सफलताओं को अपनी जीवन यात्रा को देखते हैं तो हमें अपने किसी न किसी शिक्षक की याद अवश्य आती है। तेज़ी से बदलते हुए समय और कोरोना के संकट काल में हमारे शिक्षकों के सामने भी समय के साथ बदलाव की एक चुनौती लगती है। मुझे खुशी है कि हमारे शिक्षकों ने इस चुनौती को न केवल स्वीकार किया, बल्कि, उसे अवसर में बदल भी दिया है। पढ़ाई में तकनीक का ज्यादा से ज्यादा उपयोग कैसे हो, नए तरीकों को कैसे अपनाएँ, छात्रों को मदद कैसे करें यह हमारे शिक्षकों ने सहजता से अपनाया है और अपने students को भी सिखाया है। आज, देश में, हर जगह कुछ न कुछ innovation हो रहे हैं। शिक्षक और छात्र मिलकर कुछ नया कर रहे हैं। मुझे भरोसा है जिस तरह देश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिये एक बड़ा बदलाव होने जा रहा है, हमारे शिक्षक इसका भी लाभ छात्रों तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभायेंगे।

साथियो, और विशेषकर मेरे शिक्षक साथियो, वर्ष 2022 में हमारा देश स्वतंत्रता के 75 वर्ष का पर्व मनायेगा। स्वतंत्रता के पहले अनेक वर्षों तक हमारे देश में आज़ादी की जंग उसका एक लम्बा इतिहास रहा है। इस दौरान देश का कोई कोना ऐसा नहीं था जहाँ आजादी के मतवालों ने अपने प्राण न्योछावर न किये हों, अपना सर्वस्व त्याग न दिया हो। यह बहुत आवश्यक है कि हमारी आज की पीढ़ी, हमारे विद्यार्थी, आज़ादी की जंग हमारे देश के नायकों से परिचित रहे, उसे उतना ही महसूस करे। अपने जिले से, अपने क्षेत्र में, आज़ादी के आन्दोलन के समय क्या हुआ, कैसे हुआ, कौन शहीद हुआ, कौन कितने समय तक देश के लिए जेल में रहा। यह बातें हमारे विद्यार्थी जानेंगे तो उनके व्यक्तित्व में भी इसका प्रभाव दिखेगा इसके लिये बहुत से काम किये जा सकते हैं, जिसमें हमारे शिक्षकों का बड़ा दायित्व है। जैसे, आप जिस जिले में हैं वहाँ शताब्दियों तक जो आजादी का जंग चला उन आजादियों के जंग में वहाँ

कोई घटनाएं घटी हैं क्या ? इसे लेकर विद्यार्थियों से research करवाई जा सकती है। उसे स्कूल के हस्तलिखित अंक के रूप में तैयार किया जा सकता है आप के शहर में स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ा कोई स्थान हो तो छात्र छात्राओं को वहाँ ले जा सकते हैं। किसी स्कूल के विद्यार्थी ठान सकते हैं कि वो आजादी के 75 वर्ष में अपने क्षेत्र के आजादी के 75 नायकों पर कवितायें लिखेंगे, नाट्य कथाएँ लिखेंगे। आप के प्रयास देश के हजारों लाखों unsung heroes को सामने लायेंगे जो देश के लिए जिये, जो देश के लिए खप गए जिनके नाम समय के साथ विस्मृत हो गए, ऐसे महान व्यक्तित्वों को अगर हम सामने लायेंगे आजादी के 75 वर्ष में उन्हें याद करेंगे तो उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी और जब 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मना रहे हैं तब मैं मेरे शिक्षक साथियों से जरूर आग्रह करूँगा कि वे इसके लिए एक माहोल बनाएं सब को जोड़ें और सब मिल करके जुट जाएँ।

मेरे प्रिय देशवासियो, देश आज जिस विकास यात्रा पर चल रहा है इसकी सफलता सुखद तभी होगी जब हर एक देशवासी इसमें शामिल हो, इस यात्रा का यात्री हो, इस पथ का पथिक हो, इसलिए, ये जरूरी है कि हर एक देशवासी स्वस्थ रहे सुखी रहे और हम मिलकर के कोरोना को पूरी तरह से हराएं। कोरोना तभी हारेगा जब आप सुरक्षित रहेंगे, जब आप “दो गज की दूरी, मास्क जरूरी”, इस संकल्प का पूरी तरह से पालन करेंगे आप सब स्वस्थ रहिये, सुखी रहिये, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ अगली ‘मन की बात’ में फिर मिलेंगे।

बहुत बहुत धन्यवाद | नमस्कार |

VRRK/KP

(रिलीज़ आईडी: 1649709) आगंतुक पटल : 692

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English

प्रधानमंत्री कार्यालय

मन की बात 2.0' की 17वीं कड़ी में प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ (25.10.2020)

प्रविष्टि तिथि: 25 OCT 2020 11:38AM by PIB Delhi

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार! आज विजयादशमी यानि दशहरे का पर्व है। इस पावन अवसर पर आप सभी को ढेरों शुभकामनाएं। दशहरे का ये पर्व, असत्य पर सत्य की जीत का पर्व है। लेकिन, साथ ही, ये एक तरह से संकटों पर धैर्य की जीत का पर्व भी है। आज, आप सभी बहुत संयम के साथ जी रहे हैं, मर्यादा में रहकर पर्व, त्योहार मना रहे हैं, इसलिए, जो लड़ाई हम लड़ रहे हैं, उसमें जीत भी सुनिश्चित है। पहले, दुर्गा पंडाल में, माँ के दर्शनों के लिए इतनी भीड़ जुट जाती थी - एकदम, मेले जैसा माहौल रहता था, लेकिन, इस बार ऐसा नहीं हो पाया। पहले, दशहरे पर भी बड़े-बड़े मेले लगते थे, लेकिन इस बार उनका स्वरूप भी अलग ही है। रामलीला का त्योहार भी, उसका बहुत बड़ा आकर्षण था, लेकिन उसमें भी कुछ-न-कुछ पाबंदियाँ लगी हैं। पहले, नवरात्र पर, गुजरात के गरबा की गूंज हर तरफ़ छाई रहती थी, इस बार, बड़े-बड़े आयोजन सब बंद हैं। अभी, आगे और भी कई पर्व आने वाले हैं। अभी, ईद है, शरद पूर्णिमा है, वाल्मीकि जयंती है, फिर, धनतेरस, दिवाली, भाई-दूज, छठी मैया की पूजा है, गुरु नानक देव जी की जयंती है - कोरोना के इस संकट काल में, हमें संयम से ही काम लेना है, मर्यादा में ही रहना है।

साथियो, जब हम त्योहार की बात करते हैं, तैयारी करते हैं, तो, सबसे पहले मन में यही आता है, कि बाजार कब जाना है? क्या-क्या खरीदारी करनी है? खासकर, बच्चों में तो इसका विशेष उत्साह रहता है - इस बार, त्योहार पर, नया, क्या मिलने वाला है? त्योहारों की ये उमंग और बाजार की चमक, एक-दूसरे से जुड़ी हुई है। लेकिन इस बार जब आप खरीदारी करने जायें तो 'Vocal for Local' का अपना संकल्प अवश्य याद रखें। बाजार से सामान खरीदते समय, हमें स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देनी है।

साथियो, त्योहारों के इस हर्षोल्लास के बीच में Lockdown के समय को भी याद करना चाहिए। Lockdown में हमने, समाज के उन साथियों को और करीब से जाना है, जिनके बिना, हमारा जीवन बहुत ही मुश्किल हो जाता - सफाई कर्मचारी, घर में काम करने वाले भाई-बहन, Local सब्जी वाले, दूध वाले, Security Guards, इन सबका हमारे जीवन में क्या रोल है, हमने अब भली-भांति महसूस किया है। कठिन समय में, ये आपके साथ थे, हम सबके साथ थे। अब, अपने पर्वों में, अपनी खुशियों में भी, हमें इनको साथ रखना है। मेरा आग्रह है कि, जैसे भी संभव हो, इन्हें अपनी खुशियों में जरूर शामिल करिये। परिवार के सदस्य की तरह करिये, फिर आप देखिये, आपकी खुशियाँ, कितनी बढ़ जाती हैं।

साथियो, हमें अपने उन जाबाज सैनिकों को भी याद रखना है, जो, इन त्योहारों में भी सीमाओं पर डटे हैं। भारत-माता की सेवा और सुरक्षा कर रहे हैं। हमें उनको याद करके ही अपने त्योहार मनाने हैं। हमें घर में एक दीया, भारत माता के इन वीर बेटे-बेटियों के सम्मान में भी जलाना है। मैं, अपने वीर जवानों से भी कहना चाहता हूँ कि आप भले ही सीमा पर हैं, लेकिन पूरा देश आपके साथ है, आपके लिए कामना कर रहा है। मैं उन परिवारों के त्याग को भी नमन करता हूँ जिनके बेटे-बेटियाँ आज सरहद पर हैं। हर वो व्यक्ति जो देश से जुड़ी किसी-न-किसी जिम्मेदारी की वजह से अपने घर पर नहीं है, अपने परिवार से दूर है - मैं, हृदय से उसका आभार प्रकट करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, आज जब हम Local के लिए Vocal हो रहे हैं तो दुनिया भी हमारे local products की fan हो रही है। हमारे कई local products में global होने की बहुत बड़ी शक्ति है। जैसे एक उदाहरण है -खादी का। लम्बे समय तक खादी, सादगी की पहचान रही है, लेकिन, हमारी खादी आज, Eco- friendly fabric के रूप में जानी जा रही है। स्वास्थ्य की दृष्टि से ये body friendly fabric है, all weather fabric है और आज खादी fashion statement तो बन ही रही है। खादी की popularity तो बढ़ ही रही है, साथ ही, दुनिया में कई जगह, खादी बनाई भी जा रही है। मेक्सिको में एक जगह है 'ओहाका(Oaxaca)'। इस इलाके में कई गाँव ऐसे हैं, जहाँ स्थानीय ग्रामीण, खादी बुनने का काम करते हैं। आज, यहाँ की खादी 'ओहाका खादी' के नाम से प्रसिद्ध हो चुकी है। ओहाका में खादी कैसे पहुँचीं ये भी कम interesting नहीं है। दरअसल, मेक्सिको के एक युवा Mark Brown ने एक बार महात्मा गाँधी पर एक फिल्म देखी। Brown ये फिल्म देखकर बापू से इतना प्रभावित हुए कि वो भारत में बापू के आश्रम आये और बापू के बारे में और गहराई से जाना-समझा। तब Brown को एहसास हुआ कि खादी केवल एक कपड़ा ही नहीं है बल्कि ये तो एक पूरी जीवन पद्धति है। इससे किस तरह से ग्रामीण अर्थव्यवस्था और आत्मनिर्भरता का दर्शन जुड़ा है Brown इससे बहुत प्रभावित हुए। यहीं से Brown ने ठाना कि वो मेक्सिको में जाकर खादी का काम शुरू करेंगे। उन्होंने, मेक्सिको के ओहाका में ग्रामीणों को खादी का काम सिखाया, उन्हें प्रशिक्षित किया और आज 'ओहाका खादी' एक ब्रांड बन गया है। इस प्रोजेक्ट की वेबसाइट पर लिखा है 'The Symbol of Dharma in Motion'। इस वेबसाइट में Mark Brown का बहुत ही दिलचस्प interview भी मिलेगा। वे बताते हैं कि शुरू में लोग खादी को लेकर संदेह में थे, परन्तु, आखिरकार, इसमें लोगों की दिलचस्पी बढ़ी और इसका बाज़ार तैयार हो गया। ये कहते हैं, ये राम-राज्य से जुड़ी बातें हैं जब आप लोगों की जरूरतों को पूरा करते हैं तो फिर लोग भी आपसे जुड़ने चले आते हैं।

साथियों, दिल्ली के Connaught Place के खादी स्टोर में इस बार गाँधी जयंती पर एक ही दिन में एक करोड़ रुपये से ज्यादा की खरीदारी हुई। इसी तरह कोरोना के समय में खादी के मास्क भी बहुत popular हो रहे हैं। देशभर में कई जगह self help groups और दूसरी संस्थाएँ खादी के मास्क बना रहे हैं। यू.पी. में, बाराबंकी में एक महिला हैं - सुमन देवी जी। सुमन जी ने self help group की अपनी साथी महिलाओं के साथ मिलकर खादी मास्क बनाना शुरू किया। धीरे-धीरे उनके साथ अन्य महिलाएँ भी जुड़ती चली गईं, अब वे सभी मिलकर हजारों खादी मास्क बना रही हैं। हमारे local products की खूबी है कि उनके साथ अक्सर एक पूरा दर्शन जुड़ा होता है।

मेरे प्यारे देशवासियों, जब हमें अपनी चीजों पर गर्व होता है, तो दुनिया में भी उनके प्रति जिज्ञासा बढ़ती है। जैसे हमारे आध्यात्म ने, योग ने, आयुर्वेद ने, पूरी दुनिया को आकर्षित किया है। हमारे कई खेल भी दुनिया को आकर्षित कर रहे हैं। आजकल, हमारा मलखम्ब भी, अनेकों देशों में प्रचलित हो रहा है। अमेरिका में चिन्मय पाटणकर और प्रज्ञा पाटणकर ने जब अपने घर से ही मलखम्ब सिखाना शुरू किया था, तो, उन्हें भी अंदाजा नहीं था, कि इसे इतनी सफलता मिलेगी। अमेरिका में आज, कई स्थानों पर, मलखम्ब Training Centers चल रहे हैं। बड़ी संख्या में अमेरिका के युवा इससे जुड़ रहे हैं, मलखम्ब सीख रहे हैं। आज, जर्मनी हो, पोलैंड हो, मलेशिया हो, ऐसे करीब 20 अन्य देशों में भी मलखम्ब खूब popular हो रहा है। अब तो, इसकी, World Championship शुरू की गई है, जिसमें, कई देशों के प्रतिभागी हिस्सा लेते हैं। भारत में तो प्रचीन काल से कई ऐसे खेल रहे हैं, जो हमारे भीतर, एक असाधारण विकास करते हैं। हमारे Mind, Body Balance को एक नए आयाम पर ले जाते हैं। लेकिन संभवतः, नई पीढ़ी के हमारे युवा साथी, मलखम्ब से उतना परिचित ना हों। आप इसे इन्टरनेट पर जरूर search करिए और देखिये।

साथियो, हमारे देश मे कितनी ही Martial Arts हैं। मैं चाहूँगा कि हमारे युवा-साथी इनके बारे में भी जाने, इन्हें सीखें , और, समय के हिसाब से innovate भी करे। जब जीवन मे बड़ी चुनौतियाँ नहीं होती हैं, तो व्यक्तित्व का सर्वश्रेष्ठ भी बाहर निकल कर नहीं आता है। इसलिए अपने आप को हमेशा challenge करते रहिए।

मेरे प्यारे देशवासियो, कहा जाता है 'Learning is Growing'। आज, 'मन की बात' में, मैं आपका परिचय एक ऐसे व्यक्ति से कराऊँगा जिसमें एक अनोखा जुनून है। ये जुनून है दूसरों के साथ reading और learning की खुशियों को बाँटने का। ये हैं पोन मरियप्पन, पोन मरियप्पन तमिलनाडु के तुतुकुड़ी में रहते हैं। तुतुकुड़ी को pearl city यानि मोतियों के शहर के रूप में भी जाना जाता है। यह कभी पांडियन साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। यहाँ रहने वाले मेरे दोस्त पोन मरियप्पन, hair cutting के पेशे से जुड़े हैं और एक saloon चलाते हैं। बहुत छोटा सा saloon है। उन्होंने एक अनोखा और प्रेरणादायी काम किया है। अपने saloon के एक हिस्से को ही पुस्तकालय बना दिया है। यदि व्यक्ति saloon में अपनी बारी का इंतज़ार करने के दौरान वहाँ कुछ पढ़ता है, और जो पढ़ा है उसके बारे में थोड़ा लिखता है, तो पोन मरियप्पन जी उस ग्राहक को discount देते हैं - है न मजेदार!

आइये, तुतुकुड़ी चलते हैं - पोन मरियप्पन जी से बात करते हैं।

प्रधानमंत्री: पोन मरियप्पन जी, वणकम्म... नल्ला इर किंगडा ?

(प्रधानमंत्री: पोन मरियप्पन जी, वणकम्म। आप कैसे हैं ?)

पोन मरियप्पन: ... (तमिल में जवाब)

(पोन मरियप्पन: माननीय प्रधानमंत्री जी, वणकम्म (नमस्कार)।)

प्रधानमंत्री : वणकम्म, वणकम्म .. उन्गलक्के इन्द लाइब्रेरी आइडिया येप्पड़ी वन्ददा

(प्रधानमंत्री : वणकम्म, वणकम्म। आपको ये पुस्तकालय का जो

idea है, ये कैसे आया?)

पोन मरियप्पन: ... (तमिल में जवाब)

(पोन मरियप्पन के उत्तर का हिंदी अनुवाद : मैं आठवीं कक्षा तक पढ़ा हूँ। उसके आगे मेरी पारिवारिक परिस्थितियों के कारण मैं अपनी पढ़ाई को आगे बढ़ा ना सका। जब मैं पढ़े-लिखे आदमियों को देखता हूँ, तब मेरे मन में एक कमी महसूस हो रही थी। इसीलिये, मेरे मन में ये आया कि हम क्यों ना एक पुस्तकालय स्थापित करें, और उससे, बहुत से लोगों को ये लाभ होगा, यही मेरे लिये एक प्रेरणा बनी।

प्रधानमंत्री : उन्गलक्के येन्द पुत्तहम पिडिक्कुम ?

(प्रधानमंत्री : आपको कौन सी पुस्तक बहुत पसन्द है ?)

पोन मरियप्पन: ... (तमिल में जवाब)

(पोन मरियप्पन (Pon Mariyappan) : मुझे 'तिरुकुरल' बहुत प्रिय है।)

प्रधानमंत्री : उन्गकिट्ट पेसीयदिल येनक्क। रोम्बा मगिलची। नल वाड़ तुक्कल

(प्रधानमंत्री : आपसे बात करने में मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। आपको बहुत शुभकामनाएं।)

पोन मरियप्पन: ... (तमिल में जवाब)

(पोन मरियप्पन: मैं भी माननीय प्रधानमंत्री जी से बात करते हुए अति प्रसन्नता महसूस कर रहा हूँ।)

प्रधानमंत्री : नल वाड़ तुक्कल

(प्रधानमंत्री : अनेक शुभकामनाएं।)

पोन मरियप्पन: ... (तमिल में जवाब)

(पोन मरियप्पन: धन्यवाद प्रधानमंत्री जी।)

प्रधानमंत्री: Thank you.

हमने अभी पोन मरियप्पन जी से बात की। देखिये, कैसे वो लोगों के बालों को तो संवारते ही हैं, उन्हें, अपना जीवन संवारने का भी अवसर देते हैं। थिरुकुरल की लोकप्रियता के बारे में सुनकर बहुत अच्छा लगा। थिरुकुरल की लोकप्रियता के बारे में आप सबने भी सुना। आज हिन्दुस्तान की सभी भाषाओं में थिरुकुरल उपलब्ध है। अगर मौका मिले तो जरूर पढ़ना चाहिए। जीवन के लिए वह एक प्रकार से मार्ग दर्शक है।

साथियों लेकिन आपको ये जानकारी खुशी होगी कि पूरे भारत में अनेक लोग हैं जिन्हें ज्ञान के प्रसार से अपार खुशी मिलती है। ये वो लोग हैं जो हमेशा इस बात के लिए तत्पर रहते हैं कि हर कोई पढ़ने के लिए प्रेरित हो। मध्य प्रदेश के सिंगरौली की शिक्षिका, उषा दुबे जी ने तो scooty को ही

mobile library में बदल दिया। वे प्रतिदिन अपने चलते-फिरते पुस्तकालय के साथ किसी न किसी गाँव में पहुँच जाती हैं और वहाँ बच्चों को पढ़ाती हैं। बच्चे उन्हें प्यार से किताबों वाली दीदी कह कर बुलाते हैं। इस साल अगस्त में अरुणाचल प्रदेश के निरजुली के Rayo Village में एक Self Help Library बनाई गई है। दरअसल, यहाँ की मीना गुरुंग और दिवांग होसाई को जब पता चला कि कस्बे में कोई library नहीं है तो उन्होंने इसकी funding के लिए हाथ बढ़ाया। आपको ये जानकार हैरानी होगी कि इस library के लिए कोई membership ही नहीं है। कोई भी व्यक्ति दो हफ्ते के लिए किताब ले जा सकता है। पढ़ने के बाद उसे वापस करना होता है। ये library सातों दिन, चौबीसों घंटे खुली रहती है। आस-पड़ोस के अभिभावक यह देखकर काफी खुश हैं, कि उनके बच्चे किताब पढ़ने में जुटे हैं। खासकर उस समय जब स्कूलों ने भी online classes शुरू कर दी हैं। वहीं चंडीगढ़ में एक NGO चलाने वाले संदीप कुमार जी ने एक mini van में mobile library बनाई है, इसके माध्यम से गरीब बच्चों को पढ़ने के लिए मुफ्त में books दी जाती हैं। इसके साथ ही गुजरात के भावनगर की भी दो संस्थाओं के बारे में जानता हूँ जो बेहतरीन कार्य कर रही हैं। उनमें से एक है 'विकास वर्तुल ट्रस्ट'। यह संस्था प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों के लिए बहुत मददगार है। यह ट्रस्ट 1975 से काम कर रहा है और ये 5,000 पुस्तकों के साथ 140 से अधिक magazine उपलब्ध कराता है। ऐसी एक संस्था 'पुस्तक परब' है। ये innovative project है जो साहित्यिक पुस्तकों के साथ ही दूसरी किताबें निशुल्क उपलब्ध कराते हैं। इस library में आध्यात्मिक, आयुर्वेदिक उपचार, और कई अन्य विषयों से सम्बंधित पुस्तकें भी शामिल हैं। यदि आपको इस तरह के और प्रयासों के बारे में कुछ पता है तो मेरा आग्रह है कि आप उसे social media पर जरूर साझा करें। ये उदाहरण पुस्तक पढ़ने या पुस्तकालय खोलने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि, यह उस नए भारत की भावना का भी प्रतीक है जिसमें समाज के विकास के लिए हर क्षेत्र और हर तबके के लोग नए-नए और innovative तरीके अपना रहे हैं। गीता में कहा गया है -

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्र मिह विद्यते

अर्थात्, ज्ञान के समान, संसार में कुछ भी पवित्र नहीं हैं। मैं ज्ञान का प्रसार करने वाले, ऐसे नेक प्रयास करने वाले, सभी महानुभावों का हृदय से अभिनंदन करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, कुछ ही दिनों बाद सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की जन्म जयंती, 31 अक्टूबर को हम सब, 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के तौर पर मनाएंगे। 'मन की बात' में, पहले भी हमने, सरदार पटेल पर विस्तार से बात की है। हमने, उनके विराट व्यक्तित्व के कई आयामों पर चर्चा की है। बहुत कम लोग मिलेंगे जिनके व्यक्तित्व में एक साथ कई सारे तत्व मौजूद हों - वैचारिक गहराई, नैतिक साहस, राजनैतिक विलक्षणता, कृषि क्षेत्र का गहरा ज्ञान और राष्ट्रीय एकता के प्रति समर्पण भाव। क्या आप सरदार पटेल के बारे में एक बात जानते हैं जो उनके sense of humour को दर्शाती है। जरा उस लौह-पुरुष की छवि की कल्पना कीजिये जो राजे-रजवाड़ों से बात कर रहे थे, पूज्य बापू के जन-आंदोलन का प्रबंधन कर रहे थे, साथ ही, अंग्रेजों से लड़ाई भी लड़ रहे थे, और इन सब के बीच भी, उनका sense of humour पूरे रंग में होता था। बापू ने सरदार पटेल के बारे में कहा था - उनकी विनोदपूर्ण बातें मुझे इतना हँसाती थी कि हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जाते थे, ऐसा, दिन में एक बार नहीं, कई-कई बार होता था। इसमें, हमारे लिए भी एक सीख है, परिस्थितियाँ कितनी भी विषम क्यों न हो, अपने sense of humour को जिंदा रखिये, यह हमें सहज तो रखेगा ही, हम अपनी समस्या का समाधान भी निकाल पायेंगे। सरदार साहब ने यही तो किया था!

मेरे प्यारे देशवासियो, सरदार पटेल ने अपना पूरा जीवन देश की एकजुटता के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने, भारतीय जनमानस को, स्वतंत्रता आन्दोलन से जोड़ा। उन्होंने, आजादी के साथ किसानों के मुद्दों को जोड़ने का काम किया। उन्होंने, राजे-रजवाड़ों को हमारे राष्ट्र के साथ एक करने का काम किया। वे विविधता में एकता के मंत्र को हर भारतीय के मन में जगा रहे थे।

साथियो, आज हमें अपनी वाणी, अपने व्यवहार, अपने कर्म से हर पल उन सब चीजों को आगे बढ़ाना है जो हमें 'एक' करे, जो देश के एक भाग में रहने वाले नागरिक के मन में, दूसरे कोने में रहने वाले नागरिक के लिए सहजता और अपनत्व का भाव पैदा कर सके। हमारे पूर्वजों ने सदियों से ये प्रयास निरंतर किए हैं। अब देखिये, केरल में जन्मे पूज्य आदि शंकराचार्य जी ने, भारत की चारों दिशाओं में चार महत्वपूर्ण मठों की स्थापना की- उत्तर में बद्रीकाश्रम, पूर्व में पूरी, दक्षिण में श्रृंगेरी और पश्चिम में द्वारका। उन्होंने श्रीनगर की यात्रा भी की, यही कारण है कि, वहाँ, एक 'Shankracharya Hill' है। तीर्थाटन अपने आप में भारत को एक सूत्र में पिरोता है। ज्योतिर्लिंगों और शक्तिपीठों की श्रृंखला भारत को एक सूत्र में बांधती है। त्रिपुरा से लेकर गुजरात तक, जम्मू-कश्मीर से लेकर तमिलनाडु तक स्थापित, हमारे, आस्था के केंद्र, हमें 'एक' करते हैं। भक्ति आन्दोलन पूरे भारत में एक बड़ा जन-आन्दोलन बन गया, जिसने, हमें, भक्ति के माध्यम से एकजुट किया। हमारे नित्य जीवन में भी ये बातें कैसे घुल गयी हैं, जिसमें एकता की ताकत है। प्रत्येक अनुष्ठान से पहले विभिन्न नदियों का आह्वान किया जाता है - इसमें सुदूर उत्तर में स्थित सिन्धु नदी से लेकर दक्षिण भारत की जीवनदायिनी कावेरी नदी तक शामिल है। अक्सर, हमारे यहाँ लोग कहते हैं, स्नान करते समय पवित्र भाव से, एकता का मंत्र ही बोलते हैं:

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती ।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

इसी प्रकार सिखों के पवित्र स्थलों में 'नांदेड़ साहिब' और 'पटना साहिब' गुरुद्वारे शामिल हैं। हमारे सिख गुरुओं ने भी, अपने जीवन और सद्कार्यों के माध्यम से एकता की भावना को प्रगाढ़ किया है। पिछली शताब्दी में, हमारे देश में, डॉ बाबासाहब अम्बेडकर जैसी महान विभूतियाँ रहीं हैं, जिन्होंने, हम सभी को, संविधान के माध्यम से एकजुट किया।

साथियो,

Unity is Power, Unity is strength,

Unity is Progress, Unity is Empowerment,

United we will scale new heights

वैसे, ऐसी ताकतें भी मौजूद रही हैं जो निरंतर हमारे मन में संदेह का बीज बोने की कोशिश करते रहते हैं, देश को बाँटने का प्रयास करते हैं। देश ने भी हर बार, इन बद-इरादों का मुंहतोड़ जवाब दिया है। हमें निरंतर अपनी creativity से, प्रेम से, हर पल प्रयासपूर्वक अपने छोटे से छोटे कामों में, 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के खूबसूरत रंगों को सामने लाना है, एकता के नए रंग भरने हैं, और, हर नागरिक को भरने हैं। इस सन्दर्भ में, मैं, आप सबसे, एक website देखने का आग्रह करता हूँ - ekbharat.gov.in (एक भारत डॉट गव डॉट इन)। इसमें, national integration की हमारी मुहिम को आगे बढ़ाने के कई प्रयास दिखाई देंगे। इसका एक दिलचस्प corner है - आज का वाक्य। इस section में हम, हर रोज एक वाक्य को, अलग-अलग भाषाओं में कैसे बोलते हैं, यह सीख सकते हैं। आप, इस website के लिए contribute भी

करें, जैसे, हर राज्य और संस्कृति में अलग-अलग खान-पान होता है। यह व्यंजन स्थानीय स्तर के खास ingredients, यानी, अनाज और मसालों से बनाए जाते हैं। क्या हम इन local food की recipe को local ingredients के नामों के साथ, 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' website पर share कर सकते हैं? Unity और Immunity को बढ़ाने के लिए इससे बेहतर तरीका और क्या हो सकता है!

साथियों, इस महीने की 31 तारीख को मुझे केवड़िया में ऐतिहासिक Statue of Unity पर हो रहे कई कार्यक्रमों में शामिल होने का अवसर मिलेगा। आप लोग भी जरूर जुड़ियेगा।

मेरे प्यारे देशवासियों, 31 अक्टूबर को हम 'वाल्मीकि जयंती' भी मनाएंगे। मैं, महर्षि वाल्मीकि को नमन करता हूँ और इस खास अवसर के लिए देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। महर्षि वाल्मीकि के महान विचार करोड़ों लोगों को प्रेरित करते हैं, शक्ति प्रदान करते हैं। वे लाखों-करोड़ों गरीबों और दलितों के लिए, बहुत बड़ी उम्मीद हैं। उनके भीतर आशा और विश्वास का संचार करते हैं। वो कहते हैं - किसी भी मनुष्य की इच्छाशक्ति अगर उसके साथ हो, तो वह कोई भी काम बड़ी आसानी से कर सकता है। ये इच्छाशक्ति ही है, जो कई युवाओं को असाधारण कार्य करने की ताकत देती है। महर्षि वाल्मीकि ने सकारात्मक सोच पर बल दिया - उनके लिए, सेवा और मानवीय गरिमा का स्थान, सर्वोपरी है। महर्षि वाल्मीकि के आचार, विचार और आदर्श आज New India के हमारे संकल्प के लिए प्रेरणा भी हैं और दिशा-निर्देश भी हैं। हम, महर्षि वाल्मीकि के प्रति सदैव कृतज्ञ रहेंगे कि उन्होंने आने वाली पीढ़ियों के मार्गदर्शन के लिए रामायण जैसे महाग्रंथ की रचना की।

31 अक्टूबर को भारत की पूर्व-प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी जी को हमने खो दिया। मैं आदरपूर्वक उनको श्रद्धांजलि देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, आज, कश्मीर का पुलवामा पूरे देश को पढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आज देश-भर में बच्चे अपना Home Work करते हैं, Notes बनाते हैं, तो कहीं-न-कहीं इसके पीछे पुलवामा के लोगों की कड़ी मेहनत भी है। कश्मीर घाटी, पूरे देश की, करीब-करीब 90% Pencil Slate, लकड़ी की पट्टी की मांग को पूरा करती है, और उसमें बहुत बड़ी हिस्सेदारी पुलवामा की है। एक समय में, हम लोग विदेशों से Pencil के लिए लकड़ी मंगवाते थे, लेकिन अब हमारा पुलवामा, इस क्षेत्र से, देश को आत्मनिर्भर बना रहा है। वास्तव में, पुलवामा के ये Pencil Slates, States के बीच के Gaps को कम कर रहे हैं। घाटी की चिनार की लकड़ी में High Moisture Content और Softness होती है, जो पेंसिल के निर्माण के लिए उसे सबसे Suitable बनाती है। पुलवामा में, उक्खू को, Pencil Village के नाम से जाना जाता है। यहाँ, Pencil Slate निर्माण की कई इकाईयाँ हैं, जो रोजगार उपलब्ध करा रही हैं, और इनमें काफ़ी संख्या में महिलाएं काम करती हैं।

साथियों, पुलवामा की अपनी यह पहचान तब स्थापित हुई है, जब, यहाँ के लोगों ने कुछ नया करने की ठानी, काम को लेकर Risk उठाया, और खुद को उसके प्रति समर्पित कर दिया। ऐसे ही कर्मठ लोगों में से एक है - मंजूर अहमद अलाई। पहले मंजूर भाई लकड़ी काटने वाले एक सामान्य मजदूर थे। मंजूर भाई कुछ नया करना चाहते थे ताकि उनकी आने वाली पीढ़ियाँ गरीबी में ना जिए। उन्होंने, अपनी पुस्तैनी जमीन बेच दी और Apple Wooden Box, यानी सेब रखने वाले लकड़ी के बक्से बनाने की यूनिट शुरू की। वे, अपने छोटे से Business में जुटे हुए थे, तभी मंजूर भाई को कहीं से पता चला कि पेंसिल निर्माण में Poplar Wood यानी चिनार की लकड़ी का उपयोग शुरू किया गया है। ये जानकारी मिलने के बाद, मंजूर भाई ने अपनी उद्यमिता का परिचय देते हुए कुछ Famous Pencil Manufacturing Units को Poplar Wooden Box की आपूर्ति शुरू की। मंजूर जी को ये बहुत फायदेमंद लगा और उनकी आमदनी भी अच्छी खासी बढ़ने लगी। समय के साथ उन्होंने Pencil Slate Manufacturing Machinery ले ली और उसके बाद उन्होंने देश की बड़ी-बड़ी कंपनियों को Pencil Slate की Supply शुरू कर दी। आज, मंजूर भाई

के इस Business का Turnover करोड़ों में है और वे लगभग दो-सौ लोगों को आजीविका भी दे रहे हैं। आज 'मन की बात' के जरिये समस्त देशवासियों की ओर से, मैं मंजूर भाई समेत, पुलवामा के मेहनतकश भाई-बहनों को और उनके परिवार वालों को, उनकी प्रशंसा करता हूँ - आप सब, देश के Young Minds को, शिक्षित करने के लिए, अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, Lock down के दौरान Technology-Based service delivery के कई प्रयोग हमारे देश में हुए हैं, और अब ऐसा नहीं रहा कि बहुत बड़ी technology और logistics companies ही यह कर सकती हैं। झारखण्ड में ये काम महिलाओं के self help group ने करके दिखाया है। इन महिलाओं ने किसानों के खेतों से सब्जियाँ और फल लिए और सीधे, घरों तक पहुँचाए। इन महिलाओं ने 'आजीविका farm fresh' नाम से एक app बनवाया जिसके जरिए लोग आसानी से सब्जियाँ मंगा सकते थे। इस पूरे प्रयास से किसानों को अपनी सब्जियाँ और फलों के अच्छे दाम मिले, और लोगों को भी fresh सब्जियाँ मिलती रही। वहाँ 'आजीविका farm fresh' app का idea बहुत popular हो रहा है। Lock down में इन्होंने 50 लाख रुपये से भी ज्यादा के फल-सब्जियाँ लोगों तक पहुँचाई हैं। साथियो, agriculture sector में नई सम्भावनाएँ बनता देख, हमारे युवा भी काफी संख्या में इससे जुड़ने लगे हैं। मध्यप्रदेश के बड़वानी में अतुल पाटीदार अपने क्षेत्र के 4 हजार किसानों को digital रूप से जोड़ चुके हैं। ये किसान अतुल पाटीदार के E-platform farm card के जरिए, खेती के सामान, जैसे, खाद, बीज, pesticide, fungicide आदि की home delivery पा रहे हैं, यानी किसानों को घर तक, उनकी जरूरत की चीज़ें मिल रही हैं। इस digital platform पर आधुनिक कृषि उपकरण भी किराये पर मिल जाते हैं। Lock down के समय भी इस digital platform के जरिये किसानों को हजारों packet delivery किये गए, जिसमें, कपास और सब्जियों के बीज भी थे। अतुल जी और उनकी team, किसानों को तकनीकी रूप से जागरूक कर रही है, on line payment और खरीदारी सिखा रही हैं।

साथियो, इन दिनों महाराष्ट्र की एक घटना पर मेरा ध्यान गया। वहाँ एक farmer producer कंपनी ने मक्के की खेती करने वाले किसानों से मक्का खरीदा। कंपनी ने किसानों को इस बार, मूल्य के अतिरिक्त, bonus भी दिया। किसानों को भी एक सुखद आश्चर्य हुआ। जब उस कंपनी से पूछा, तो उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने जो नये कृषि क़ानून बनाये हैं, अब उसके तहत, किसान, भारत में कहीं पर भी फ़सल बेच पा रहे हैं और उन्हें अच्छे दाम मिल रहे हैं, इसलिये उन्होंने सोचा कि इस extra profit को किसानों के साथ भी बाँटना चाहिये। उस पर उनका भी हक़ है और उन्होंने किसानों को bonus दिया है। साथियो, bonus अभी भले ही छोटा हो, लेकिन ये शुरुआत बहुत बड़ी है। इससे हमें पता चलता है कि नये कृषि-क़ानून से जमीनी स्तर पर, किस तरह के बदलाव किसानों के पक्ष में आने की संभावनाएँ भरी पड़ी हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज 'मन की बात' में देशवासियों की असाधारण उपलब्धियाँ, हमारे देश, हमारी संस्कृति के अलग-अलग आयामों पर, आप सबसे बात करने का अवसर मिला। हमारा देश प्रतिभावान लोगों से भरा हुआ है। अगर, आप भी ऐसे लोगों को जानते हो, तो उनके बारे में बात कीजिये, लिखिये और उनकी सफलताओं को share कीजिए। आने वाले त्योहारों की आपको और आपके पूरे परिवार को बहुत-बहुत बधाई। लेकिन एक बात याद रखिये और त्योहारों में, ज़रा विशेष रूप से याद रखिये- mask पहनना है, हाथ साबुन से धोते रहना है, दो गज की दूरी बनाये रखनी है।

साथियो, अगले महीने फिर आपसे 'मन की बात' होगी, बहुत-बहुत धन्यवाद।

VRRK/SH/VK/AIR

(रिलीज़ आईडी: 1667427) आगतुक पटल : 435

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English

प्रधानमंत्री कार्यालय

मन की बात 2.0' की 18वीं कड़ी में प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ (29.11.2020)

प्रविष्टि तिथि: 29 NOV 2020 11:47AM by PIB Delhi

मेरे प्यारे देशवासियों, नमस्कार। 'मन की बात' की शुरुआत में, आज, मैं, आप सबके साथ एक खुशखबरी साझा करना चाहता हूँ। हर भारतीय को यह जानकर गर्व होगा, कि, देवी अन्नपूर्णा की एक बहुत पुरानी प्रतिमा, Canada से वापस भारत आ रही है। यह प्रतिमा, लगभग, 100 साल पहले, 1913 के करीब, वाराणसी के एक मंदिर से चुराकर, देश से बाहर भेज दी गयी थी। मैं, Canada की सरकार और इस पुण्य कार्य को सम्भव बनाने वाले सभी लोगों का इस सहृदयता के लिये आभार प्रकट करता हूँ। माता अन्नपूर्णा का, काशी से, बहुत ही विशेष संबंध है। अब, उनकी प्रतिमा का, वापस आना, हम सभी के लिए सुखद है। माता अन्नपूर्णा की प्रतिमा की तरह ही, हमारी विरासत की अनेक अनमोल धरोहरें, अंतर्राष्ट्रीय गिराँहों का शिकार होती रही हैं। ये गिराँह, अंतर्राष्ट्रीय बाजार में, इन्हें, बहुत ऊँची कीमत पर बेचते हैं। अब, इन पर, सख्ती तो लगायी ही जा रही है, इनकी वापसी के लिए, भारत ने अपने प्रयास भी बढ़ाये हैं। ऐसी कोशिशों की वजह से बीते कुछ वर्षों में, भारत, कई प्रतिमाओं, और, कलाकृतियों को वापस लाने में सफल रहा है। माता अन्नपूर्णा की प्रतिमा की वापसी के साथ, एक संयोग ये भी जुड़ा है, कि, कुछ दिन पूर्व ही World Heritage Week मनाया गया है। World Heritage Week, संस्कृति प्रेमियों के लिये, पुराने समय में वापस जाने, उनके इतिहास के अहम् पड़ावों को पता लगाने का एक शानदार अवसर प्रदान करता है। कोरोना कालखंड के बावजूद भी, इस बार हमने, innovative तरीके से लोगों को ये Heritage Week मनाते देखा। Crisis में culture बड़े काम आता है, इससे निपटने में अहम् भूमिका निभाता है। Technology के माध्यम से भी culture, एक, emotional recharge की तरह काम करता है। आज देश में कई museums और libraries अपने collection को पूरी तरह से digital बनाने पर काम कर रहे हैं। दिल्ली में, हमारे राष्ट्रीय संग्रहालय ने इस सम्बन्ध में कुछ सराहनीय प्रयास किये हैं। राष्ट्रीय संग्रहालय द्वारा करीब दस virtual galleries, introduce करने की दिशा में काम चल रहा है – है ना मज़ेदार! अब, आप, घर बैठे दिल्ली के National Museum galleries का tour कर पायेंगे। जहाँ एक ओर सांस्कृतिक धरोहरों को technology के माध्यम से अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुंचाना अहम् है, वहीं, इन धरोहरों के संरक्षण के लिए technology का उपयोग भी महत्वपूर्ण है। हाल ही में, एक interesting project के बारे में पढ़ रहा था। नॉर्वे के उत्तर में Svalbard नाम का एक द्वीप है। इस द्वीप में एक project, Arctic world archive बनाया गया है। इस archive में बहुमूल्य heritage data को इस प्रकार से रखा गया है कि किसी भी प्रकार के प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदाओं से प्रभावित ना हो सकें। अभी हाल ही में, यह भी जानकारी आयी है, कि, अजन्ता गुफाओं की धरोहर को भी digitize करके इस project में संजोया जा रहा है। इसमें, अजन्ता गुफाओं की पूरी झलक देखने को मिलेगी। इसमें, digitalized और restored painting के साथ-साथ इससे सम्बंधित दस्तावेज़ और quotes भी शामिल होंगे। साथियों, महामारी ने एक ओर जहाँ, हमारे काम करने के तौर-तरीकों को बदला है, तो दूसरी ओर प्रकृति को नये ढंग से अनुभव करने का भी अवसर दिया है। प्रकृति को देखने के हमारे नज़रिये में भी बदलाव आया है। अब हम सर्दियों के मौसम में कदम रख रहे हैं। हमें प्रकृति के अलग-अलग रंग देखने को मिलेंगे। पिछले कुछ दिनों से internet Cherry Blossoms की viral तस्वीरों से भरा हुआ है। आप सोच रहे होंगे जब मैं Cherry Blossoms की बात कर रहा हूँ तो जापान की इस प्रसिद्ध पहचान की बात कर रहा हूँ – लेकिन ऐसा नहीं है! ये, जापान की तस्वीरें नहीं हैं। ये, अपने मेघालय के शिलाँग की तस्वीरें हैं। मेघालय की खूबसूरती को इन Cherry Blossoms ने और बढ़ा दिया है।

साथियों, इस महीने 12 नवंबर से डॉक्टर सलीम अली जी का 125वाँ जयंती समारोह शुरू हुआ है। डॉक्टर सलीम ने पक्षियों की दुनिया में Bird watching को लेकर उल्लेखनीय कार्य किया है। दुनिया के bird watchers को भारत के प्रति आकर्षित भी किया है। मैं, हमेशा से Bird watching के शौकीन लोगों का प्रशंसक रहा हूँ। बहुत धैर्य के साथ, वो, घंटों तक, सुबह से शाम तक, Bird watching कर सकते हैं, प्रकृति के अनूठे नजारों का लुत्फ उठा सकते हैं, और, अपने ज्ञान को हम लोगों तक भी पहुंचाते रहते हैं। भारत में भी, बहुत-सी Bird watching society सक्रिय हैं। आप भी, जरूर, इस विषय के साथ जुड़िये। मेरी भागदौड़ की ज़िन्दगी में, मुझे भी, पिछले दिनों केवड़िया में, पक्षियों के साथ, समय बिताने का बहुत ही यादगार अवसर मिला। पक्षियों के साथ बिताया हुआ समय, आपको, प्रकृति से भी जोड़ेगा, और, पर्यावरण के लिए भी प्रेरणा देगा।

मेरे प्यारे देशवासियों, भारत की संस्कृति और शास्त्र, हमेशा से ही पूरी दुनिया के लिए आकर्षण के केंद्र रहे हैं। कई लोग तो, इनकी खोज में भारत आए, और, हमेशा के लिए यहीं के होकर रह गए, तो, कई लोग, वापस अपने देश जाकर, इस संस्कृति के संवाहक बन गए। मुझे “Jonas Masetti” के काम के बारे में जानने का मौका मिला, जिन्हें, ‘विश्वनाथ’ के नाम से भी जाना जाता है। जॉनस ब्राजील में लोगों को वेदांत और गीता सिखाते हैं। वे विश्वविद्या नाम की एक संस्था चलाते हैं, जो रियो डि जेनेरो (Rio de Janeiro) से घंटों भर की दूरी पर Petrópolis (पेट्रोपोलिस) के पहाड़ों में स्थित है। जॉनस ने Mechanical Engineering की पढ़ाई करने के बाद, stock market में अपनी कंपनी में काम किया, बाद में, उनका रुझान भारतीय संस्कृति और खासकर वेदान्त की तरफ हो गया। Stock से लेकर के Spirituality तक, वास्तव में, उनकी, एक लंबी यात्रा है। जॉनस ने भारत में वेदांत दर्शन का अध्ययन किया और 4 साल तक वे कोयंबटूर के आर्ष विद्या गुरुकुलम में रहे हैं। जॉनस में एक और खासियत है, वो, अपने मैसेज को आगे पहुंचाने के लिए technology का प्रयोग कर रहे हैं। वह नियमित रूप से online programmes करते हैं। वे, प्रतिदिन पॉडकास्ट (Podcast) करते हैं। पिछले 7 वर्षों में जॉनस ने वेदांत पर अपने Free Open Courses के माध्यम से डेढ़ लाख से अधिक students को पढ़ाया है। जॉनस ना केवल एक बड़ा काम कर रहे हैं, बल्कि, उसे एक ऐसी भाषा में कर रहे हैं, जिसे, समझने वालों की संख्या भी बहुत अधिक है। लोगों में इसको लेकर काफी रुचि है कि Corona और Quarantine के इस समय में वेदांत कैसे मदद कर सकता है? ‘मन की बात’ के माध्यम से मैं जॉनस को उनके प्रयासों के लिए बधाई देता हूँ और उनके भविष्य के प्रयासों के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

साथियों, इसी तरह, अभी, एक खबर पर आपका ध्यान जरूर गया होगा। न्यूजीलैंड में वहाँ के नवनिर्वाचित एम.पी. डॉ॰ गौरव शर्मा ने विश्व की प्राचीन भाषाओं में से एक संस्कृत भाषा में शपथ ली है। एक भारतीय के तौर पर भारतीय संस्कृति का यह प्रसार हम सब को गर्व से भर देता है। ‘मन की बात’ के माध्यम से मैं गौरव शर्मा जी को शुभकामनाएं देता हूँ। हम सभी की कामना है, वो, न्यूजीलैंड के लोगों की सेवा में नई उपलब्धियां प्राप्त करें।

मेरे प्यारे देशवासियों, कल 30 नवंबर को, हम, श्री गुरु नानक देव जी का 551वाँ प्रकाश पर्व मनाएंगे। पूरी दुनिया में गुरु नानक देव जी का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

Vancouver से Wellington तक, Singapore से South Africa तक, उनके संदेश हर तरफ सुनाई देते हैं। गुरुग्रन्थ साहिब में कहा गया है – “सेवक को सेवा बन आई”, यानी, सेवक का काम, सेवा करना है। बीते कुछ वर्षों में कई अहम पड़ाव आये और एक सेवक के तौर पर हमें बहुत कुछ करने का अवसर मिला। गुरु साहिब ने हमसे सेवा ली। गुरु नानक देव जी का ही 550वाँ प्रकाश पर्व, श्री गुरु गोविंद सिंह जी का 350वाँ प्रकाश पर्व, अगले वर्ष श्री गुरु तेग बहादुर जी का 400वाँ प्रकाश पर्व भी है। मुझे महसूस होता है, कि, गुरु साहब की मुझ पर विशेष कृपा रही जो उन्होंने मुझे हमेशा अपने कार्यों में बहुत करीब से जोड़ा है।

साथियों, क्या आप जानते हैं कि कच्छ में एक गुरुद्वारा है, लखपत गुरुद्वारा साहिब। श्री गुरु नानक जी अपने उदासी के दौरान लखपत गुरुद्वारा साहिब में रुके थे। 2001 के भूकंप से इस गुरुद्वारे को भी नुकसान पहुँचा था। यह गुरु साहिब की कृपा ही थी, कि, मैं, इसका जीर्णोद्धार सुनिश्चित कर पाया। ना केवल गुरुद्वारा की मरम्मत की गई

बल्कि उसके गौरव और भव्यता को भी फिर से स्थापित किया गया। हम सब को गुरु साहिब का भरपूर आशीर्वाद भी मिला। लखपत गुरुद्वारा के संरक्षण के प्रयासों को 2004 में UNESCO Asia Pacific Heritage Award में Award of Distinction दिया गया। Award देने वाली Jury ने ये पाया कि मरम्मत के दौरान शिल्प से जुड़ी बारीकियों का विशेष ध्यान रखा गया। Jury ने यह भी नोट किया कि गुरुद्वारा के पुनर्निर्माण कार्य में सिख समुदाय की ना केवल सक्रिय भागीदारी रही, बल्कि, उनके ही मार्गदर्शन में ये काम हुआ। लखपत गुरुद्वारा जाने का सौभाग्य मुझे तब भी मिला था जब मैं मुख्यमंत्री भी नहीं था। मुझे वहाँ जाकर असीम ऊर्जा मिलती थी। इस गुरुद्वारे में जाकर हर कोई खुद को धन्य महसूस करता है। मैं, इस बात के लिए बहुत कृतज्ञ हूँ कि गुरु साहिब ने मुझसे निरंतर सेवा ली है। पिछले वर्ष नवम्बर में ही करतारपुर साहिब corridor का खुलना बहुत ही ऐतिहासिक रहा। इस बात को मैं जीवनभर अपने हृदय में संजो कर रखूँगा। यह, हम सभी का सौभाग्य है, कि, हमें श्री दरबार साहिब की सेवा करने का एक और अवसर मिला। विदेश में रहने वाले हमारे सिख भाई-बहनों के लिए अब दरबार साहिब की सेवा के लिए राशि भेजना और आसान हो गया है। इस कदम से विश्व-भर की संगत, दरबार साहिब के और करीब आ गई है।

साथियों, ये, गुरु नानक देव जी ही थे, जिन्होंने, लंगर की परंपरा शुरू की थी और आज हमने देखा कि दुनिया-भर में सिख समुदाय ने किस प्रकार कोरोना के इस समय में लोगों को खाना खिलाने की अपनी परंपरा को जारी रखा है, मानवता की सेवा की - ये परंपरा, हम सभी के लिए निरंतर प्रेरणा का काम करती है। मेरी कामना है, हम सभी, सेवक की तरह काम करते रहे। गुरु साहिब मुझसे और देशवासियों से इसी प्रकार सेवा लेते रहें। एक बार फिर, गुरु नानक जयंती पर, मेरी, बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, पिछले दिनों, मुझे, देश-भर की कई Universities के students के साथ संवाद का, उनकी education journey के महत्वपूर्ण events में शामिल होने का, अवसर प्राप्त हुआ है। Technology के ज़रिये, मैं, IIT-Guwahati, IIT-Delhi, गाँधीनगर की Deendayal Petroleum University, दिल्ली की JNU, Mysore University और Lucknow University के विद्यार्थियों से connect हो पाया। देश के युवाओं के बीच होना बेहद तरो-ताजा करने वाला और ऊर्जा से भरने वाला होता है। विश्वविद्यालय के परिसर तो एक तरह से Mini India की तरह होते हैं। एक तरफ़ जहाँ इन campus में भारत की विविधता के दर्शन होते हैं, वहीं, दूसरी तरफ़, वहाँ New India के लिए बड़े-बड़े बदलाव का passion भी दिखाई देता है। कोरोना से पहले के दिनों में जब मैं रु-ब-रु किसी institution की event में जाता था, तो, यह आग्रह भी करता था, कि, आस-पास के स्कूलों से गरीब बच्चों को भी उस समारोह में आमंत्रित किया जाए। वो बच्चे, उस समारोह में, मेरे special guest बनकर आते रहे हैं। एक छोटा सा बच्चा उस भव्य समारोह में किसी युवा को Doctor, Engineer, Scientist बनते देखता है, किसी को Medal लेते हुए देखता है, तो उसमें, नए सपने जगते हैं - मैं भी कर सकता हूँ, यह आत्मविश्वास जगता है। संकल्प के लिए प्रेरणा मिलती है।

साथियों, इसके अलावा एक और बात जानने में मेरी हमेशा रुचि रहती है कि उस institution के alumni कौन हैं, उस संस्थान के अपने alumni से regular engagement की व्यवस्था है क्या? उनका alumni network कितना जीवंत है...

मेरे युवा दोस्तों, आप तब तक ही किसी संस्थान के विद्यार्थी होते हैं जब तक आप वहाँ पढाई करते हैं, लेकिन, वहाँ के alumni, आप, जीवन-भर बने रहते हैं। School, college से निकलने के बाद दो चीजें कभी खत्म नहीं होती हैं - एक, आपकी शिक्षा का प्रभाव, और दूसरा, आपका, अपने school, college से लगाव। जब कभी alumni आपस में बात करते हैं, तो, school, college की उनकी यादों में, किताबों और पढाई से ज्यादा campus में बिताया गया समय और दोस्तों के साथ गुजारे गए लम्हे होते हैं, और, इन्हीं यादों में से जन्म लेता है एक भाव institution के लिए कुछ करने का। जहाँ आपके व्यक्तित्व का विकास हुआ है, वहाँ के विकास के लिए आप कुछ करें इससे बड़ी खुशी और क्या हो सकती है? मैंने, कुछ ऐसे प्रयासों के बारे में पढ़ा है, जहाँ, पूर्व विद्यार्थियों ने, अपने पुराने संस्थानों को बढ़-

चढ़ करके दिया है। आजकल, alumni इसको लेकर बहुत सक्रिय हैं। IITians ने अपने संस्थानों को Conference Centres, Management Centres, Incubation Centres जैसे कई अलग-अलग व्यवस्थाएं खुद बना कर दी हैं। ये सारे प्रयास वर्तमान विद्यार्थियों के learning experience को improve करते हैं। IIT दिल्ली ने एक endowment fund की शुरुआत की है, जो कि एक शानदार idea है। विश्व की जानी-मानी university में इस प्रकार के endowments बनाने का culture रहा है, जो students की मदद करता है। मुझे लगता है कि भारत के विश्वविद्यालय भी इस culture को institutionalize करने में सक्षम हैं।

जब कुछ लौटाने की बात आती है तो कुछ भी बड़ा या छोटा नहीं होता है। छोटे से छोटी मदद भी मायने रखती है। हर प्रयास महत्वपूर्ण होता है। अक्सर पूर्व विद्यार्थी अपने संस्थानों के technology upgradation में, building के निर्माण में, awards और scholarships शुरू करने में, skill development के program शुरू करने में, बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कुछ स्कूलों की old student association ने mentorship programmes शुरू किए हैं। इसमें वे अलग-अलग बैच के विद्यार्थियों को guide करते हैं। साथ ही education prospect पर चर्चा करते हैं। कई स्कूलों में खासतौर से boarding स्कूलों की alumni association बहुत strong है, जो, sports tournament और community service जैसी गतिविधियों का आयोजन करते रहते हैं। मैं पूर्व विद्यार्थियों से आग्रह करना चाहूंगा, कि उन्होंने जिन संस्था में पढाई की है, वहाँ से, अपनी bonding को और अधिक मजबूत करते रहें। चाहे वो school हो, college हो, या university। मेरा संस्थानों से भी आग्रह है कि alumni engagement के नए और innovative तरीकों पर काम करें। Creative platforms develop करें ताकि alumni की सक्रिय भागीदारी हो सके। बड़े College और Universities ही नहीं, हमारे गांवों के schools का भी, strong vibrant active alumni network हो।

मेरे प्यारे देशवासियों, 5 दिसम्बर को श्री अरबिंदो की पुण्यतिथि है। श्री अरबिंदो को हम जितना पढ़ते हैं, उतनी ही गहराई, हमें, मिलती जाती है। मेरे युवा साथी श्री अरबिंदो को जितना जानेंगे, उतना ही अपने आप को जानेंगे, खुद को समृद्ध करेंगे। जीवन की जिस भाव अवस्था में आप हैं, जिन संकल्पों को सिद्ध करने के लिए आप प्रयासरत हैं, उनके बीच, आप, हमेशा से ही श्री अरबिंदो को एक नई प्रेरणा देते पाएंगे, एक नया रास्ता दिखाते हुए पाएंगे। जैसे, आज, जब हम, 'लोकल के लिए वोकल' इस अभियान के साथ आगे बढ़ रहे हैं तो श्री अरबिंदो का स्वदेशी का दर्शन हमें राह दिखाता है। बांग्ला में एक बड़ी ही प्रभावी कविता है।

‘छुईं शुतो पाँय-मॉन्तो आशे तुंग होते ।

दिय-शलाई काठि, ताउ आसे पोते ।।

प्रो-दीप्ती जालिते खेते, शुते, जेते ।

किछुते लोक नाँय शाधीन ।।

यानि, हमारे यहां सुई और दियासलाई तक विलायती जहाज से आते हैं। खाने-पीने, सोने, किसी भी बात में, लोग, स्वतन्त्र नहीं हैं।

वो कहते भी थे, स्वदेशी का अर्थ है कि हम अपने भारतीय कामगारों, कारीगरों की बनाई हुई चीजों को प्राथमिकता दें। ऐसा भी नहीं कि श्री अरबिंदों ने विदेशों से कुछ सीखने का भी कभी विरोध किया हो। जहाँ जो नया है वहाँ से हम सीखें जो हमारे देश में अच्छा हो सकता है उसका हम सहयोग और प्रोत्साहन करें, यही तो आत्मनिर्भर भारत अभियान में, Vocal for Local मन्त्र की भी भावना है। खासकर स्वदेशी अपनाने को लेकर उन्होंने जो कुछ कहा वो आज हर देशवासी को पढ़ना चाहिये। साथियों, इसी तरह शिक्षा को लेकर भी श्री अरबिंदो के विचार बहुत स्पष्ट थे। वो शिक्षा को केवल किताबी ज्ञान, डिग्री और नौकरी तक ही सीमित नहीं मानते थे। श्री अरबिंदो कहते थे हमारी राष्ट्रीय शिक्षा,

हमारी युवा पीढ़ी के दिल और दिमाग की training होनी चाहिये, यानि, मस्तिष्क का वैज्ञानिक विकास हो और दिल में भारतीय भावनाएं भी हों, तभी एक युवा देश का और बेहतर नागरिक बन पाता है, श्री अरविंदो ने राष्ट्रीय शिक्षा को लेकर जो बात तब कही थी, जो अपेक्षा की थी आज देश उसे नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिए पूरा कर रहा है।

मेरे प्यारे देशवासियों, भारत में खेती और उससे जुड़ी चीजों के साथ नए आयाम जुड़ रहे हैं। बीते दिनों हुए कृषि सुधारों ने किसानों के लिए नई संभावनाओं के द्वार भी खोले हैं। बरसों से किसानों की जो माँग थी, जिन मांगों को पूरा करने के लिए किसी न किसी समय में हर राजनीतिक दल ने उनसे वायदा किया था, वो मांगें पूरी हुई हैं। काफी विचार विमर्श के बाद भारत की संसद ने कृषि सुधारों को कानूनी स्वरूप दिया। इन सुधारों से न सिर्फ किसानों के अनेक बन्धन समाप्त हुये हैं, बल्कि उन्हें नये अधिकार भी मिले हैं, नये अवसर भी मिले हैं। इन अधिकारों ने बहुत ही कम समय में, किसानों की परेशानियों को कम करना शुरू कर दिया है। महाराष्ट्र के धुले ज़िले के किसान, जितेन्द्र भोड़जी ने, नये कृषि कानूनों का इस्तेमाल कैसे किया, ये आपको भी जानना चाहिये। जितेन्द्र भोड़जी ने मक्के की खेती की थी और सही दामों के लिए उसे व्यापारियों को बेचना तय किया। फसल की कुल कीमत तय हुई करीब तीन लाख बत्तीस हजार रुपये। जितेन्द्र भोड़ को पच्चीस हजार रुपये एडवांस भी मिल गए थे। तय ये हुआ था कि बाकी का पैसा उन्हें पन्द्रह दिन में चुका दिया जायेगा। लेकिन बाद में परिस्थितियाँ ऐसी बनीं कि उन्हें बाकी का पेमेन्ट नहीं मिला। किसान से फसल खरीद लो, महीनों – महीनों पेमेन्ट न करो, संभवतः मक्का खरीदने वाले बरसों से चली आ रही उसी परंपरा को निभा रहे थे। इसी तरह चार महीने तक जितेन्द्र जी का पेमेन्ट नहीं हुआ। इस स्थिति में उनकी मदद की सितम्बर में जो पास हुए हैं, जो नए कृषि कानून बने हैं – वो उनके काम आये। इस कानून में ये तय किया गया है, कि फसल खरीदने के तीन दिन में ही, किसान को पूरा पेमेन्ट करना पड़ता है और अगर पेमेन्ट नहीं होता है, तो, किसान शिकायत दर्ज कर सकता है। कानून में एक और बहुत बड़ी बात है, इस कानून में ये प्रावधान किया गया है कि क्षेत्र के एस.डी.एम(SDM) को एक महीने के भीतर ही किसान की शिकायत का निपटारा करना होगा। अब, जब, ऐसे कानून की ताकत हमारे किसान भाई के पास थी, तो, उनकी समस्या का समाधान तो होना ही था, उन्होंने शिकायत की और चंद ही दिन में उनका बकाया चुका दिया गया। यानि कि कानून की सही और पूरी जानकारी ही जितेन्द्र जी की ताकत बनी। क्षेत्र कोई भी हो, हर तरह के भ्रम और अफवाहों से दूर, सही जानकारी, हर व्यक्ति के लिए बहुत बड़ा सम्बल होती है। किसानों में जागरूकता बढ़ाने का ऐसा ही एक काम कर रहे हैं, राजस्थान के बारां जिले में रहने वाले मोहम्मद असलम जी। ये एक किसान उत्पादक संघ के CEO भी हैं। जी हाँ, आपने सही सुना, किसान उत्पादक संघ के CEO। उम्मीद है, बड़ी बड़ी कंपनियों के CEOs को ये सुनकर अच्छा लगेगा कि अब देश के दूर दराज वाले इलाकों में काम कर रहे किसान संगठनों में भी CEOs होने लगे हैं, तो साथियों, मोहम्मद असलम जी ने अपने क्षेत्र के अनेकों किसानों को मिलाकर एक WhatsApp group बना लिया है। इस group पर वो हर रोज़, आस-पास की मंडियों में क्या भाव चल रहा है, इसकी जानकारी किसानों को देते हैं। खुद उनका FPO भी किसानों से फसल खरीदता है, इसलिए, उनके इस प्रयास से किसानों को निर्णय लेने में मदद मिलती है।

साथियों, जागरूकता है, तो, जीवंतता है। अपनी जागरूकता से हजारों लोगों का जीवन प्रभावित करने वाले एक कृषि उद्यमी श्री वीरेन्द्र यादव जी हैं। वीरेन्द्र यादव जी, कभी ऑस्ट्रेलिया में रहा करते थे। दो साल पहले ही वो भारत आए और अब हरियाणा के कैथल में रहते हैं। दूसरे लोगों की तरह ही, खेती में पराली उनके सामने भी एक बड़ी समस्या थी। इसके solution के लिए बहुत व्यापक स्तर पर काम हो रहा है, लेकिन, आज, 'मन की बात' में, मैं, वीरेन्द्र जी को विशेष तौर पर जिक्र इसलिए कर रहा हूँ, क्योंकि, उनके प्रयास अलग हैं, एक नई दिशा दिखाते हैं। पराली का समाधान करने के लिए वीरेन्द्र जी ने, पुआल की गांठ बनाने वाली straw baler मशीन खरीदी। इसके लिए उन्हें कृषि विभाग से आर्थिक मदद भी मिली। इस मशीन से उन्होंने पराली के गठठे बनाने शुरू कर दिया। गठठे बनाने के बाद उन्होंने पराली को Agro Energy Plant और paper mill को बेच दिया। आप जानकर हैरान रह जाएंगे कि वीरेन्द्र जी ने पराली से सिर्फ दो साल में डेढ़ करोड़ रुपये से ज्यादा का व्यापार किया है, और उसमें भी, लगभग 50 लाख रुपये मुनाफा कमाया है। इसका फ़ायदा उन किसानों को भी हो रहा है, जिनके खेतों से वीरेन्द्र जी पराली उठाते हैं। हमने कचरे से कंचन की बात तो बहुत सुनी है, लेकिन, पराली का निपटारा करके, पैसा और पुण्य कमाने का ये

अनोखा उदाहरण है। मेरा नौजवानों, विशेषकर कृषि की पढ़ाई कर रहे लाखों विद्यार्थियों से आग्रह है, कि, वो अपने आस-पास के गावों में जाकर किसानों को आधुनिक कृषि के बारे में, हाल में हुए कृषि सुधारों के बारे में, जागरूक करें। ऐसा करके आप देश में हो रहे बड़े बदलाव के सहभागी बनेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियों,

‘मन की बात’ में हम अलग-अलग, भांति-भांति के अनेक विषयों पर बात करते हैं। लेकिन, एक ऐसी बात को भी एक साल हो रहा है, जिसको हम कभी खुशी से याद नहीं करना चाहेंगे। करीब-करीब एक साल हो रहे हैं, जब, दुनिया को कोरोना के पहले case के बारे में पता चला था। तब से लेकर अब तक, पूरे विश्व ने अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। Lockdown के दौर से बाहर निकलकर, अब, vaccine पर चर्चा होने लगी है। लेकिन, कोरोना को लेकर, किसी भी तरह की लापरवाही अब भी बहुत घातक है। हमें, कोरोना के खिलाफ अपनी लड़ाई को मज़बूती से जारी रखना है।

साथियों, कुछ दिनों बाद ही, 6 दिसम्बर को बाबा साहब अम्बेडकर की पुण्य-तिथि भी है। ये दिन बाबा साहब को श्रद्धांजलि देने के साथ ही देश के प्रति अपने संकल्पों, संविधान ने, एक नागरिक के तौर पर अपने कर्तव्य को निभाने की जो सीख हमें दी है, उसे दोहराने का है। देश के बड़े हिस्से में सर्दी का मौसम भी जोर पकड़ रहा है। अनेक जगहों पर बर्फ-बारी हो रही है। इस मौसम में हमें परिवार के बच्चों और बुजुर्गों का, बीमार लोगों का विशेष ध्यान रखना है, खुद भी सावधानी बरतनी है। मुझे खुशी होती है, जब मैं यह देखता हूँ कि लोग अपने आस-पास के जरूरतमंदों की भी चिंता करते हैं। गर्म कपड़े देकर उनकी मदद करते हैं। बेसहारा जानवरों के लिए भी सर्दियाँ बहुत मुश्किल लेकर आती हैं। उनकी मदद के लिए भी बहुत लोग आगे आते हैं। हमारी युवा-पीढ़ी इस तरह के कार्यों में बहुत बढ़-चढ़ कर सक्रिय होती है। साथियों, अगली बार जब हम, ‘मन की बात’ में मिलेंगे तो 2020 का ये वर्ष समाप्ति की ओर होगा। नई उम्मीदें, नये विश्वास के साथ, हम आगे बढ़ेंगे। अब, जो भी सुझाव हों, ideas हों, उन्हें मुझ तक जरूर साझा करते रहिए। आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। आप सब, स्वस्थ रहें, देश के लिए सक्रिय रहें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

DS/AKJ/AK

(रिलीज़ आईडी: 1676932) आगतुक पटल : 368

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English